हिन्दी-जैन-साहित्य का एक अद्‌भुत ग्रन्थ : अध्यात्म बारहखड़ी

-प्रो. वीरसागर जैन

बारहखड़ी परम्परा और उसका सन्देश

बारहखड़ी परम्परा अत्यंत प्राचीन काल से प्रचलित रही है | प्राय: सभी क्षेत्रों, कालों एवं भाषाओं में इसकी रचनाएँ उपलब्ध होती हैं | अत्यधिक रोचक होने के कारण यह लोक-जीवन में भी व्याप्त रही है | लोक-जीवन में इसके अगणित प्रयोग देखने को मिलते हैं | मनोरंजन करते हुए ज्ञानाराधना करना इसका सबसे बड़ा गुण है, जिसके कारण इसे सर्वत्र विशेष समादर मिला |

बारहखड़ी को वर्णमातृका, अक्षरमातृका, अक्षरबावनी, अक्षरबत्तीसी, अक्षरमालिका, अखरावट,ककहरा आदि अनेक नामों से जाना जाता है |

बारहखड़ी-काव्य का मूल सन्देश यह है कि एक-एक अक्षर का सदुपयोग करो, अक्षर ब्रह्म है, कभी भी एक भी अक्षर का दुरुपयोग मत करो | ज्ञान-अज्ञान, पुण्य-पाप, सुख-दु:ख आदि सबका सम्बन्ध इसके सदुपयोग-दुरुपयोग पर निर्भर है | जो इसका सदुपयोग करता है, वह ज्ञानी है और जो इसका दुरुपयोग करता है, वह अज्ञानी है |

बारहखड़ी विषय विशेष पर भी आधारित होती है | जैसे जब यह भक्ति पर आधारित होगी तब इसके प्रत्येक अक्षर का प्रतिपाद्य भक्ति होगा, जब नीति पर आधारित होगी तब इसके प्रत्येक अक्षर का प्रतिपाद्य नीति होगा, जब अध्यात्म पर आधारित होगी तब इसके प्रत्येक अक्षर का प्रतिपाद्य अध्यात्म होगा, जब आयुर्वेद पर आधारित होगी तब इसके प्रत्येक अक्षर का प्रतिपाद्य आयुर्वेद होगा, इत्यादि |

बारहखड़ी परम्परा जैन साहित्य में भी अत्यंत समृद्ध रही है | प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, ब्रज, हिन्दी आदि सभी भाषाओं में जैन कवियों ने बारहखड़ी-काव्यों की रचना की है, जिसे भलीभांति समझने के लिए स्वतंत्र शोधकार्य अपेक्षित है | हम यहाँ जैन बारहखड़ी-काव्य-परम्परा की कतिपय प्रमुख कृतियों का अति संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हैं | यथा-

1. **बारहक्खरकक्क-** इसकी रचना मुनि महयंद ने .... शती में अपभ्रंश भाषा में की है | इसका अपर नाम 'दोहा-वेल्ली' भी है | इसका सम्पादन हरिवल्लभ भायाणी और प्रकाशन जैन विद्या संस्थान श्रीमहावीरजी ने किया है |
2. **आत्मबोधमातृका-** इसके रचयिता अज्ञात हैं, परन्तु इसका रचनाकाल 16-17वीं शताब्दी के मध्य है | इसमें 64 गाथाएँ हैं | इसका अपर नाम 'मातृका बावनी' भी है |
3. **उपदेशकारक कक्को-** इसकी रचना मुनि जिनवर्धन ने वि.सं. 1585 में की है |
4. **ज्ञान बावनी-** इसकी रचना कविवर पंडित बनारसीदास ने 16वीं शताब्दी में की है | इसमें 52 सवैये हैं | यह बनारसी-विलास के अंतर्गत मिलती है |
5. **अक्षर बत्तीसिका-** इसकी रचना कविवर पंडित भगवतीदास ने 16वीं शताब्दी में की है | इसमें 35 दोहे-चौपाई हैं | यह ब्रह्मविलास के अंतर्गत मिलती है |

6. **छहढाला-** इसका नाम यद्यपि 'छहढाला' है, परन्तु वास्तव में यह भी बारहखड़ी परम्परा की ही एक श्रेष्ठ कृति है | इसकी रचना कविवर द्यानतराय ने 16वीं शताब्दी में की है | इसमें 94 छन्द हैं |
7. **जसराज बावनी-** इसकी रचना जसराज कवि ने वि.सं. 1682 में की है | इसमें 57 सवैये हैं |
8. **धर्म बावनी-** इसकी रचना धर्मवर्धन कवि ने वि.सं. 1666 में की है | इसमें 56 सवैये हैं |

अध्यात्म बारहखड़ी की प्रमुख विशेषताएँ

महाकवि पंडित दौलतराम कासलीवाल (वि.सं.1749–1829) द्वारा रचित 'अध्यात्म बारहखड़ी' इसी बारहखड़ी-परम्परा की एक उत्कृष्ट रचना है | इसका अपर नाम 'भक्त्यक्षरमालिकाबावनीस्तवन' भी है | यह हिन्दी-साहित्य की मुक्तक-काव्य-परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है | महत्त्वपूर्ण ही नहीं, यदि सर्वोत्कृष्ट भी कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है | इसकी कतिपय प्रमुख विशेषताएँ द्रष्टव्य हैं-

1. सर्वप्रथम तो यह परिमाण की दृष्टि से ही बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि बारहखड़ी-परम्परा में ही नहीं, समूची मुक्तककाव्यपरम्परा में इतनी विशाल रचना दूसरी मिलना दुर्लभ है | इसमें कुल मिलाकर लगभग दस हजार छंद हैं |
2. छंद भी मात्र दोहा, सोरठा, चौपाई आदि ही नहीं हैं, अपितु बड़े-बड़े मत्तगयन्द, मनहरण आदि एवं हिन्दी में दुर्लभ ऐसे अनेक छन्द भी प्रयुक्त हैं, जिनमें निम्नलिखित के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं- मालिनी, भुजंगप्रयात, अनुष्टुप, आर्या, मंदाक्रांता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, द्रुतविलम्बित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसंततिलका, शिखरिणी आदि | तथा ये छंद भी नमूने के दो-चार नहीं हैं, अपितु सैकड़ों की संख्या में हैं | इन छन्दों का सौन्दर्य देखते ही बनता है | इस प्रकार यह रचना छन्दों की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है |
3. इस रचना में वर्णमाला के हर अक्षर पर छंद लिखे गये हैं, एक भी अक्षर छोड़ा या बदला नहीं गया है | जैसे कि अ आ इ ई उ ऊ तो हैं ही, ऋ ॠ ऌ ॡ भी हैं, अं और अः भी हैं | इसी प्रकार व्यंजनों में भी ङ ञ ण न म जैसे अनुनासिक वर्णों पर भी कवि ने विपुल छंद लिखे हैं | इतना ही नहीं, हर अक्षर पर उसकी सभी 12 मात्राओं का प्रयोग करके दिखाया है | प्रत्येक वर्ण-वर्णन के अंत में तो कवि ने एक ही छंद में 12 मात्राओं का प्रयोग किया है, जो उसके अद्‌भुत काव्य-कौशल का निदर्शन है |
4. प्रत्येक वर्ण के प्रारम्भ में दो-चार छंद संस्कृत भाषा में भी लिखे गये हैं, जो मंगलाचरण के समान भी प्रतीत होते हैं | ये भी साहित्यिक, दार्शनिक आदि अनेक दृष्टियों से बड़े महत्त्वपूर्ण हैं |
5. पूरी रचना में भक्ति, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की त्रिवेणी कलकल कर रही है | रीतिकाल में लिखी हुई होने के बाद भी इस रचना में कहीं कोई श्रृंगार के नाम पर वासना का चित्रण नहीं हुआ है |
6. कवि के व्यक्तित्व एवं तत्कालीन इतिहास को समझने की दृष्टि से भी यह रचना बहुत महत्त्वपूर्ण है |
7. शब्दकोश की दृष्टि से भी यह रचना बहुत महत्त्वपूर्ण है | इसमें नाममाला, एकाक्षरीकोष आदि अनेक कोशग्रन्थों की सहायता से एक-एक शब्द के सैकड़ों पर्यायवाची शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है |
8. जैन कथा साहित्य की दृष्टि से भी यह रचना बहुत महत्त्वपूर्ण है | इसमें कदम-कदम पर जैन पुराणों की हजारों अंतर्कथाएँ भरी हुई हैं |
9. रचना में कहीं-कहीं कवि ने स्वयं ही अपने छन्दों की गद्य में टीका/व्याख्या भी की है, जिससे ज्ञात होता है कि उनके छन्दों का एक-एक शब्द कितना अर्थगर्भित है | ऐसे स्थल भी हिंदी-गद्य के विकास आदि

अनेक दृष्टियों से बड़े महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं | उदाहरणार्थ आ वर्ण-वर्णन के 8वें छंद 'आदिधुर आदिगुर...' की टीका/व्याख्या पठनीय है, जो लगभग तीन पृष्ठों में लिखी गई है |

10. पूरी रचना कवि के प्रकांड पांडित्य का निदर्शन प्रस्तुत करती है | इसमें कदम-कदम पर जैन शास्त्रों की अगाध गहराइयाँ अभिव्यक्त हुई हैं | भेद-प्रभेद तो हजारों की संख्या में मानों कवि को कंठस्थ ही हैं और वह उन्हें बताने में मानों अत्यंत कुशल है | 64 ऋद्धि, 148 कर्म, 336 मतिज्ञान ही नहीं, 84 हजार शील एवं 84 लाख योनियों के भेद भी वह बड़ी सुगमता से पाठक को समझा देता है |

इस रचना की अन्य भी अनेकानेक विशेषताएँ हैं, परन्तु अभी समयाभाव से नहीं लिखा जा सकता है | आशा है कोई शोधार्थी इस पर व्यवस्थित शोधकार्य करेगा और साहित्यजगत में इस रचना का महत्त्व स्थापित होगा | मैं तो व्यक्तिगत रूप में इस कृति से अत्यधिक प्रभावित हूँ और इसे आद्योपांत लगभग दस बार पढ़ चुका हूँ एवं इस पर दो-तीन व्याख्यान भी कर चुका हूँ | इस रचना पर मेरा ध्यान सन् 1988 से ही लगा हुआ है, जब मैंने "पंडित दौलतराम कासलीवाल और उनका साहित्य" विषय पर पी-एच. डी. करना प्रारम्भ किया था | यद्यपि बारहखड़ी-काव्य की परम्परा साहित्य में बहुत पहले से चली आ रही है | उसके अनेक सुन्दर-सुन्दर ग्रंथ आज भी उपलब्ध होते हैं; परन्तु इस 'अध्यात्मबारहखड़ी' जैसा अद्‌भुत ग्रन्थ मैंने आज तक नहीं देखा | क्या परिमाण और क्या गुणवत्ता -दोनों ही दृष्टियों से यह ग्रन्थ बहुत महत्त्वपूर्ण है | एक तो अन्य बारहखड़ी-ग्रन्थों में लगभग सब छोटे-छोटे ग्रंथ ही हैं, इतना विशालकाय कोई नहीं है; दूसरे- अन्य बारहखड़ी-ग्रन्थों में प्रायः व्यावहारिक या नैतिक विषय ही आये हैं, परन्तु इसमें भक्ति एवं अध्यात्म का एकदम सरस एवं दिव्य वर्णन प्रस्तुत किया गया है- 'अध्यात्मविद्या विद्यानाम्' |

'अध्यात्म बारहखड़ी' के रचयिता

'अध्यात्मबारहखड़ी' के रचयिता महाकवि पण्डित दौलतराम कासलीवाल हैं, जो हिन्दी-साहित्य के इतिहास में मुख्यत: से खड़ी बोली हिन्दी गद्य के पुरोधा के रूप में ही विशेष जाने जाते हैं, किन्तु वे एक उच्च कोटि के कवि भी थे -इस बात से हिन्दी-जगत प्रायः अनजान है | उनका समग्र परिचय मैं अपने पीएच. डी. के शोधप्रबंध 'पंडित दौलतराम कासलीवाल और उनका साहित्य' में लिख चुका हूँ | तथा एक स्वतन्त्र लेख भी 'पंडित दौलतराम कासलीवाल का प्रामाणिक जीवनवृत्त' शीर्षक से संक्षेप में लिखने का प्रयास किया है, जो मेरी इसी कृति में संकलित भी है | यह सबके लिए विशेष उपयोगी हो सकता है |

'अध्यात्म बारहखड़ी' का प्रकाशन-

'अध्यात्मबारहखड़ी' दो रूपों में उपलब्ध होती है | एक को हम इसका संक्षिप्त संस्करण कह सकते हैं और दूसरे को इसका बृहद् संस्करण, किन्तु ऐसा कैसे हुआ -इस सम्बन्ध में अनेक विचार उत्पन्न होते हैं और कुछ भी निर्णय नहीं हो पाता है | पहले तो मुझे लगा कि कवि ने इसे पहले संक्षेप में लिखा होगा और बाद में उसमें ही परिवर्धन कर दिया होगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ है | बाद में लगा कि पहले इसका बृहद् संस्करण लिखा होगा और बाद में उसे ही संक्षेपरुचि पाठकों के लिए संक्षिप्त कर दिया होगा, किन्तु ऐसा भी सिद्ध नहीं होता | दरअसल,दोनों संस्करणों में नाम, विषयवस्तु एवं वर्णनशैली की तो समानता है, परन्तु इनके छन्द परस्पर नहीं मिलते | बहुत कम छन्द ही एक दूसरे से मिलते हैं, शेष हजारों छन्द अलग-अलग ही हैं | अत: मैं तो अभी इन्हें कवि की दो स्वतंत्र रचनाएँ ही मान रहा हूँ और इसीलिए इसके संक्षिप्त संस्करण का प्रकाशन ज्ञानचंदजी बिल्टिवाला के विशेष सहयोग से जैन विद्या संस्थान श्रीमहावीरजी से सन् 2002 में करा दिया था और इसके बृहद् संस्करण का प्रकाशन अब श्री साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली (फोन 9873390338) से कराया है | आशा है आप इस कृति का स्वाध्याय अवश्य करेंगे, आपको बहुत आनन्द आएगा |